divinepramilabhagwan.com

# दादा भगवान वाणी

## Dada Bhagwan Vaani

Dada Bhagwan Vaani (audio, mp3) is available at
divinepramilabhagwan.com/audio/Dadaji-Vaani/
DB Vaani 053

# दादा भगवान वाणी

जो तुम्हारी भूल हो गयी है, उसको सुधारना ज़रूर है। जो कुछ तुम wrong किया है तुम अभी उसको छोड दो अभी right में आ जाओ। ऐसा है, जो आनंद है वो तुम्हारे में पहले ही है, अभी कुछ नया कुछ तुम पैदा नहीं कर सकते है।

First of all you must unlearn what you have learnt. पहले आओ गुरु के पास जो कुछ जानता है, उसको भुलाओ - unlearn जो कुछ सीखा है वह भूल जाओ अभी। Try to dive within the Heart. अपने दिल के अंदर में डूबी लगाओ। The Ocean of Awareness, जहां तुमको सुजागी मिलेगी। Free yourself from imaginary bondage. तुम जो अपने को बंधन में समझ बेठे है, दादा, मेरे को बहुत बंधन है, तो बंधन से छुड़ाओ अपने को, तुम्हारे को बंधन कोई भी नहीं है। You lead a Blissful Life, and have no thoughts for tomorrow, कल के लिए भी ख़याल नहीं करना, आज का अभी का ख्याल करो, की तुम गुरु से पूछ के और निश्चय करने से ही तुम होशियार हो जाता है।

> "मान ना मान पर तू है भगवान।"
> Believe it or not but you are God; says your Guru.

> पहले आओ गुरु के पास जो कुछ जानता है, उसको भुलाओ - unlearn, जो कुछ सीखा है वह भूल जाओ अभी।

मान ना मान पर तू है भगवान। Believe it or not but you are God; says your Guru. गुरुमुख नाम झपे एक वार, गुरु वाक्य सत्यम् - करके जानो। None knows me while I know all. I am that Ancient One. My past is worshipped and remembered, my present is ignored and forgotten and my future advent is anticipated with great fervor. Truth is Truth and that thou are: साक्षी दृष्टा, like a witness you feel.

ब्रह्माकार विर्ति से गजेब राम, भजेब राम अद्वैत: One without second देखने में आता है। I Am What Is. It is a sin not to say "I am Atma." Don't play miser's part.

Remember there is no old age or Death. If you discover your Real Self - that is Universal Love, that is Life Eternal. Let obstinate discussion with wise people be abandoned. बात करना छोड़ दो। Cut an endless circle of attraction & repulsion, joy & grief, fear of death & birth, pain & pleasure. You can't get release, only when you can experience the Oneness of all Existence. When you become One, with one who has become All, and therefore, feel its Oneness with all Existence. The happy loss of ego, results in the experience of All Pervading Delight.

आत्मकर को देह अध्यास छोड़ना पड़ेगा। आत्मा नज़दीक देखेगा। भगवान ही आदमी से आदमी को पैदा करते है और उनको आपस में लड़ाते है, और मारते है, और नाश करते है। हिंदू हिंदू से लड़ते है, मुसलमान मुसलमान से लड़ते है, यह बात तुम को मालूम नहीं है, इसलिए तुम सब समझते है, तो तुम मारने वाले है और तुम मरने वाले है। यह बात जरुर है, ऐसे ध्यान समाधि भी मनुष्य के लिए ज़रूरी है। लेकिन रामतीर्थ उसको जवाब दिया तो जबहि सोने का बर्तन होवे तो उसको कली कराने से ख़राब कर देगा। मैं तो पहले से ही ब्रह्म हूँ, ऐसा जान लो तुम भी तो तुम भी पहले से ही ब्रह्म है। नहीं तो कितने ठग आदमी तुम को बोलेगा तुम आत्मा का साक्षत्कार नहीं किया है, हम तुम को कराता है। अरे तुम पहले ही है भगवान तू उस को बोल दो, तो उसको शर्म आ जायेगा भाग जायेगा। यत्न भगवान पाने का नहीं है, भगवान कोई जुदा नहीं है, कोई दूसरी बात नहीं है जो तुम पायेगा। पाने का कोई necklace नहीं है, तू तो पहले ही आत्मा-परमा त्मा है। तत्वमसी। कोई भी साधन नहीं बोला है कि यह साधन से भगवान मिलेगा। अगर भगवान मिलने का कोई भी साधन होता, तो तुम काहे को नहीं कर सकता था साधन। साधन तो सब सरल है, जितने साधन तुमको सुनाया गया कर्मकाण्ड सुनाया गया वो सब झूठा है।

> Be the I, that you are really, and the cosmic riddle shall solve itself.

कोई भी कर्मकाण्ड से, तुम को कभी भगवान नहीं मिल सकता है, तुमको आनंद कभी नहीं मिल सकता है। गुरु के मुख से सुनने से ही तुम्हारा कल्याण हो जाता है। सच्चा पारस सतगुरु है, जो संत करे आप समान।

इतना ही करेगा तो अंधेरा आपे आप भाग जायेगा। बत्ती हाथ में रखकर अंधेरे को बोलो तुम मेहेरबानी करके थोड़ा टाइम ठहरो, तो ठहर सकता है अंधेरा? ऐसे ही है, हम तुम को सिखाता है - willing renunciation. सब तुम्हारे से renounce हो जायेगा। सब तुम्हारे से चला जायेगा तुम्हारे साथ नहीं रहेगा। अज्ञान तुम्हारा, जब ही ज्ञान सुनेगा तो अज्ञान आपे निकल जायेगा, नाश हो जायेगा, फिर तुम को

ढूँढना पड़ेगा अज्ञान के लिए, अज्ञान कहाँ गया? ऐसा हमारा ज्ञान है। Forgetfulness, forget everything that you have learnt till today; GOD Divine means: Be the I, that you are really, and the cosmic riddle shall solve itself. It is the mind that matters. Remove mental darkness. Light is there. Love is there in great abundance. Man is held back by ignorance. Ignorance must go; Body consciousness must go. Make mental Revolution. Body i-am-ness is the unreal. यह देह अध्यास है तुम्हारा। देह अपने को मानते है कि मैं देह हूँ, यही unreal है।

संसारा is the sea of misery, sufferings ailments, groaning, the world of death & birth, old age diseases, pain & agony. Thinking of our ownself being the fountain head of Joy we are seeking for it in the objective world. This is our trouble. This is called bondage. Release from which, is liberation. A glimpse of this joy can be had, when the mind is at peace when it is not functioning in its usual way of thinking of this & that object, but is calm & quite. This joy is really the Bliss within which is, our very Self. It is the Bliss itself which we are consciously or unconsciously seeking. In fact, we are ever One within it. Yet at present, we do not know that we are in reality Omnipresent & Unlimited, thus we feel limited & weak.

God is just; know that, God is within. Forgive me not Oh Lord! punish me for every fault.

ज्ञान से ही सब मुक्त हो जाएगा and bondage is an ignorance of the fact that we are here and now the Absolute. मैं बिलकुल आत्मा हूँ मै परमात्मा हूँ, यह नहीं जानते है, तो यह bondage है। इसका तुमको मालूम नहीं है। You are “सत चित आनंद” रूप। पूरा इंसाफ का निश्चय आ जावे तुमको तो फिर द्रोपदी जैसा, भगवान को पुकारना नहीं पड़ेगा। God is just; know that. God is within. Forgive me not Oh Lord! punish me for every fault.

जगत का पदार्थ मिथ्या समझमें आ जावे, जगत मिथ्या है। ब्रह्माकार वृति से कुत्ता, अंधा, पापी सब ब्रह्म देखने में आयेगा। अभी इच्छा भी कोई नहीं रहेगी, कुछ भी मेरे को नहीं चाहिए और मेरा भी कुछ नहीं है। Nothing is mine. अप्राप्त भी कुछ मेरे को नहीं है। सब कुछ प्राप्त हो गया। सब मैं हो गया। अहंकार छोड़के निष्कामी हो जाओ। सब मैं ही तो हूँ। साकामी स्वार्थी कर्म को छोड़ो, कुछ भी नहीं होगा सब नाश

हो जायेगा। मोह छोड़ो। सब अमानत है, यहीं छोड़ के जाने का है। मर्यादा, फर्ज़, धर्म - ज्ञानी लायक कुछ भी नहीं है। फ़ुरना, ख्याल, संकल्प, विकल्प, विखेप सब शरीर में है – मैं ब्रह्म हूँ। मेरे को दु:ख नहीं संताप कर सकता है। जनम मरण मेरे लिए नहीं है – काल मौत नाहे।

फ़ुरना, ख्याल, संकल्प, विकल्प, विखेप सब शरीर में है – मैं ब्रह्म हूँ। मेरे को दु:ख नहीं संताप कर सकता है। जनम मरण मेरे लिए नहीं है – काल मौत नाहे।

जगत का सब पदार्थ स्थिर नहीं है – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, जप, चिंता सब शरीर में चले गये। उनसे जुदाई हो गई। संसा, भ्रम और शक शुभा, उत्तर-प्रश्न करके अपना निकालो। पक्का निश्चय करो आत्मा का। कर्म भक्ति नरक में डालेगा। ज्ञान तुमको मुक्त करता है। बीमारी, बुढ़ापा और मौत नहीं आयेगा। शरीर जरुर मरेगा, आत्मा कभी भी नहीं मरता है। आत्मा फिर दूसरा स्वरूप लेता है। चौरासी लाख जूनी में आता है। तू तो पहले से ही आत्मा है। दूसरा कुछ भी कर्म करने से भगवान नहीं मिलने का है। कोट कर्म बंधन के मूल।

## अज्ञान गवाओ और पुरुषार्थ से बछड़ा बन के आओ, त्रिगुणातीत हो जाओ।

सारी दुनिया अज्ञान में है। तू अगर ज्ञान चाहता है, तो जैसा और जेकि दूसरे आदमी जो किछ करता है, वो तुम नहीं करो। जो हुए अज्ञानी आदमी है जैसा करता है, तुम ऐसा नहीं करो। आगे जैसे करता था, ऐसा अभी नहीं करो। ज्ञानी इंक़लाब Mental Revolution, क्रान्ति करो। मन को अमन रखो – जगत बनया ही नहीं। तू जगत सच समझ के बैठा है, तुम अपना change of attitude, निगाह निराली रखो, ख़्याल फिराओ, wrong outlook छोड़ के real value और view रखो। स्वंमभवः अपने को समझो। अभी जगत मिथ्या समझ और ब्रह्म सत्य समझ। हरेक चीज़ है ब्रह्म, ऐसे समझ। दुनिया की समझ अज्ञान है। तू ज्ञान सच्चा समझ, तो मैं मगंन नहीं हूँ, नाम रुप नाश है। हरेक आत्मा है, “अहम् आत्मा, तत्वमसी”। सबसे आत्मा कर जान। तू आत्मा जुं निश्चय कर और देह का अध्यास छोड़ो। यह है सच। सो मैं न, पर मै-ना।

“अहम् आत्मा तत्वमसी”। सबसे आत्मा कर जान। तू आत्मा जुं निश्चय कर और देह का अध्यास छोड़ो। यह है सच, सो मैं न, पर मै-ना।

अहमता, ममता, और करता छोड़ो, द्वैत और त्रिकुटी फ़ेक दो। सब कर्म छोड़ दो, निष्काम हो जाओ। सुन-सुन के डाला है, तो सुन-सुन के निकालो। कृष्णा भगवान बोलते है, जैसे जीव इस देह में बालक, जवान

और बूढ़ा होता है, वैसे ही वह दूसरी देह धारण करता है। असत्य वस्तु क़ायम कभी भी नहीं रह सकेगी, नाकि सत् को कोई नाश कर सकता है। जो सबमें समाया अविनाशी सो है, उनको नाश करने की ताक़त किस को भी नहीं है। आत्म नित्य है, अनंत है, लेकिन आत्म का देह फानी है। जो समझे तो आत्म कोई मारता है या आत्म मरता है, दोनो नहीं जानते है - न आत्म मारता है न मरता है, ऐसा तत्वज्ञानी जानता है। जमे न, मरे न, आत्म न हो, वड़की न हो, तो इहि को न है, आत्मा कदाचित नाश में नही आ सकता है। वो समझता है तो आत्मा अविनाशी है, अजूनी और आदि से है, वो कैसे किसको मारेगा या कैसे किसको मारेग़ा। जैसे नवा कपड़ा पहनता है तो पुराना उतारना पड़ता है, वैसे "छडे देह पुरानी तो आत्मा नई देह धारे"। न हथियार तोरे, न बाहे सारे, न पानी पसारे, न अग्नि साड़े, न हवा सुखायें - सब में समाएल आत्मा अचल ताना-तन है। ना जामदो, ना मरदो। पीछे शोक काहे को करना चाहिए।

आत्मा आश्चर्यवत है, हर कोई सुनता है लेकिन कोई समझता नही है। सब देह के अन्दर है, अमर देह वासी, क्षमता योग है, योग है, रमज़ युक्ति है। शरीर मरते है, तो तुम को शोक नही करना चाहिए, अशोक रहो। सब दानों में उत्तम दान करना, ज्ञान दान है। ज्ञान यज्ञ श्रेष्ट है। Know the best charity is to prevent him from accepting charity again. मतलब है जबही जिसको तुम चैरिटी देता है तो उसको फिर भीख माँगना नही पड़ेगा। फिर वापस कभी भी माँगेगा नही ऐसा समझाओ "इच्छा मातरम् अविधा"। कोई भी इच्छा रखना यह तुम्हारा अविद्या है, अज्ञान है। हमको इच्छा नही है और तुम इच्छा और मोह नही छोड़ सकते है, यह सफ़ावत को देखो।

Adjust your will with God's will. Allow your nature to carry out the will of the higher power. "जो तुध भावे साई भलिकार, तेरा भाणा मीठा लागें"।

When you realize that you are not body, you will not feel pain like Christ & Gandhi who meditate jail life into a Pilgrimage. Mahatma Gandhi बेगेर पूछने के अपने ख़्याल से जाके जेल में बैठा तो उसको जेल का कोई भी दु:ख समझ में नही आया। क्यूँकि अपनी मर्ज़ी से जाके बैठा। Adjust your will with God's Will. Allow your Nature to carry out the Will of the Higher Power. जो तुध भावे साई भलिकार, तेरा भाणा मीठा लागें"।

You Do Nothing, as everything is already done. Troubles won't come, if you invite them not. Love not your country, but your kind.

परधर्म में नही जाओ। करतूत पशु की मानस जात, लोक पचारा करे दिन रात। सब करम करना क़सूर है, सब कर्मन में दोष है, तुम सिर्फ गुणातीत हो जाओ। इसलिए जनक ने कर्म त्याग दिया, द्वैत समझी। Projection of God.

जगत बनया ही नही, जगत है नही, जगत मिथ्या है, जैसे भूल भूलैया का खेल। रस्सी देखने से, सर्प का ख्याल और खोफ जाता है। अदृष्टान देखने से, झूठ गुम हो जाता है। झूठ का बात नही करना चाहिये। When Knowledge dawns, the universe disappears. ज्ञान भया, तो कर्मयी नाश। कर्म कांड वेद वाजी सिखाते है, कर्म करने से जनम मरण में आना पड़ता है। गुणा तीत बनो। कर्म करना अहंकार है।

जगत बनया ही नही, जगत है नही, जगत मिथ्या है, जैसे भूल भूलैया का खेल। When Knowledge dawns, the universe disappears.

"जो जो जाने मै किछ करता तब लग जनम मरण में फिरता"। A good deed binds the doer as much as a Sin.

राजा जनक तन मन वाणी की तपस्या की, तीनो कर्म त्याग दिया। जब अद्वैत मत समता योग समझा, सब करमों में दोष है, जैसे लकड़ी में धुआँ, सर्व कर्मान सन्यसः सर्व धर्मान परितज्य। Make I Thy Single Refuge. ख्याल रखो, चुप का है संसारा। आठी पहर समाधी में रहो। All life is one with God, in no way separate from Him. विवेक विचार, पुरुषार्थ और अभ्यास और वैराग, उत्तर-प्रश्न करने से संसा भ्रम दूर करने से, निश्चय आत्मिक बुद्धि बन जायेगा। Willing Renunciation हो जायेगा। असमर्थ को भोगना पड़ता है और जो समर्थ है वो अपनी खुशी से ही त्याग कर देता है। जो देह का अध्यास छोड़ता है, तो निश्च्य आत्मिक है। मुक्त है। सर्व दुखन की निवर्ती उसको हो जाती है। सतपुरख जिस जानिया, सतगुरु तिस का नाऊ। जिसने सतपुरख परमात्मा अपने को समझा है उसका ही नाम सतगुरु है। गुरु ईश्वर गुरु गोरख ब्रह्म गुरु पारबति माई।

Make I Thy Single Refuge. ख्याल रखो, चुप का है संसारा। आठी पहर समाधी में रहो।

गुरु माया का पति है। दस अवतार तू ही लिया है। सो प्रभु दूर नाही सो प्रभु तू है। संत लोग पुकारते कर-कर लम्बे हाथ, तू परमात्म देव है, तू त्रिलोकी नाथ। निराकार साकार धारे आयो जग में। हर चीज़ को दिल से सदा ही नाकार करो। सतगुरु है तुम्हारा आत्मा। जब तक तुम बाहर गुरु मानता है तो नरक अन्दर भटकते

है। अपने में ही देखो God is within, परधर्म में नही जाओ, इंद्रीयो के धर्म में तुम नही जाओ। इंद्रिया अपने अपने धर्म में रहती है। जबहि तुम भगवान भुलाते है, तभी दया, तप और दान और तीर्थ करते है।

तीर्थ बरत अरु दान करे और मन में धरै गुमान। नानक निष्फल जात है जो कुंचर सनान।

पंछी उड़ता है, मच्छी स्वाभाविक तैरती है, ऐसा तुम भी स्वाभाविक आत्मा अमर है यह जान लो। Never approach anything, except as God. सतगुरु सिख की आत्मा और सिख सतगुरु की देह।

कृष्ण महराज का ज्ञान प्रत्यक्ष फल देने वाला है। कृष्ण means आकर्षण। सतगुरु does not touch money nor he curses anybody. इसलिए आप सुहेला और ज़ुबान सुहेला गुरू उनको बोलता है। ज्ञानी does not see evil, सतगुरु Attracts and Inspires and Transforms. He does not change others, but he changes himself. There is no desire when you see nothing but God. When you see nothing but God then कुछ भी अप्राप्त नही रह जाता है। और जब ही तुम को इच्छा नही है, तो "चाह गयी तो चिंता गयी, मनुआ बेपरवाह, जिस जीव को चाह नही तो शाहों को शाह। इच्छा मात्रम् अविद्या"। इच्छा ही अविद्या है, यह अज्ञान है तुमको। कोई भी इच्छा तुम को ग़ुलाम बनाती है। इच्छा करने से मरना बेहतर है। माँगने से मरना बेहतर है। क्या मांगू किछ थिर ना रहाई! कितनी भी इच्छायें तुम्हारी पूरी होती है तो भी तुम को तृप्ति कभी नही आती। "तृप्त न आवे माया पाछै पावै "। तुम्हारे को डर से ही जनम हुआ है और यह डर जो है तुम्हारा, वो प्रेम से जाएगा दूसरा कोई भी रास्ता नही है। Be thoughtless, that is Bliss. जबही ख़्यालों से खाली हो जायेगा यही आनंद है। इच्छा और अहंकार छोड़ने के बगैर कभी भगवान नही मिलेगा। सत चित आनंद नही होगा।

सतगुरु Attracts and Inspires and Transforms. He does not change others, but he changes himself.

God may forgive but your nervous system never does. Why destroy present happiness by a distant misery which may never come at all? जिस मन भुख, तिस को कभी न लागे दुःख। सतगुरु का तह जाँए लह जांए तर।

God may forgive but your nervous system never does. Why destroy present happiness by a distant misery which may never come at all?

You can't buy Bliss with money, as Fish can't live happy in honey. आप

विसर्जन होये तो सिमरन कहिए सोए। जगत दिखाई देता है भरम के आधार से। द्वैत का नाश होता है, आत्म विचार से। ईश्वर जीव बन देखन आया। आप से आप ही पूजा, माया के भरम में भूला। जगत मिथ्या है, तेरी कल्पना है। आज से लेके, भगवान को प्यार करने की आदत रखो, तो दूसरा सब भूल जायेगा। यह मन का स्वभाव है, की हमेशा बेहतर चीज़ पसंद करता है। Best prayer is healing of a broken heart. World is filled with God.

[ राजा जनक था, गुरु के पास गया तो उसको एक दम यह तत्व ज्ञान हो गया। तो यह लोग बोलता है मेरे को क्यो नही हुआ, क्योकि उसका आख़िरी जभी जन्म होता है, बहुत जन्म की अंत की अंत होती है तो फिर से जन्म नही लेने का है। तो उसका मतलब है तो उसको जल्दी से कैसे आत्मा समझ मै आ जाती है। अपना स्वरुप उसको पहचान क्यो होती है क्योंकि उसके पछाड़ी का ऐसा जन्म है की जो आगे उसने बहुत पुरुषार्थ किया है, खाली एक जन्म ले के योग युक्त होने के लिए आया है। तीसरा है जो आके पूछता है, कोशिश करता है तो उसको आत्मा समझ में नही आती है वह खुद ही जा के घर मै बोलता है पता नही वह आत्मा आत्मा बोलता है, हमको तो निश्चय मे नही आता है। उसका past है तो नही समझता है। उसका उतना पक्का देह है जितना आत्मा पक्का होना चाहिए। इसके इलवा उसको देह पक्का है। गुरु बोलता है तुम देह छोड़ो तो इसकी ज़रुरी नही है कि हम देह को जीते जी अभी छोड़े क्योंकि उसका रावण का अहंकार है, दस इंद्रीयो का अहंकार है, मैं यह करता हूँ, मैं देखता हूँ, मैं सुनता हूँ, मै कमाता हूँ मैं यह करता हूँ। हाउमे का रोग छोड़ता ही नही है। पर कोई तो जल्दी में गुरु का बात सुनके ही छोड देता है। ]

यह शरीर का धर्म और कर्म है तुम आत्मा है तो अपना धर्म सम्भालो। तुम्हारा धरम है कुछ भी नही करना, कुछ भी नही समझना –कर्म करत होई नह कर्म।

> तुम्हारा धरम है कुछ भी नही करना, कुछ भी नही समझना –"कर्म करत होई नह कर्म"।

भगवान कितने काम करते भी है, वो करते हुए भी नहकर्मी, मैं करता नही हूँ। उसके खाते में कोई भी नही आता। तुम भी ऐसा देखो जो कोई भी कर्म तुम्हारे खाते में नही आये। नही तो भगवान देखने वाला है, कह नही रहा है उसके पास बड़ा camera है, तुम्हारा फोटा निकलता जाता है, जो तुम्हारे दिल में बात है वो भगवान को मालूम पड़ता है। यह है तुम्हारा विश्वास है के नही? अच्छा अब तक विश्वास नही हुआ है (तुमरा दिल जानता है भगवान है के नही)।

ऐसा ही जानता है भगवान को, तो भगवान सब तुम्हारी बात जानता है और तुम भगवान को नही जानता है, यह कैसी बात है। भगवान तुम सब लोग को जानता है क्योंकि तुम सब लोग वो भगवान ही है। मै ही तो हूँ , ऐसा भगवान समझता है, मै ही तो हूँ, जो तुम्हारे अन्दर में है, वो भगवान के अन्दर में है। तुम्हारे अन्दर में

भी आत्मा है, तो हमारे अन्दर में भी आत्मा ही है। एक ही भगवान है जहाँ तहाँ, एक ही भगवान है। ऐसा यह अठारह अध्याए में, भगवान फिर-फिर खोल के बोलता है। कर्म कैसा भी अच्छा भी कर्म करना नही चाहिए। कर्म का करता नही बनो। नही तो तुम्हारे खाते में कर्म आ जायेगा। कि फलाने मल ने कर्म किया, बस तुम कर्म मुक्त नही हो सकता है। ज़रूरी चौरासी लाख जूनी में जायेगा मरेगा। ब्रह्मज्ञानी जो है, वो मरता नही है। जब तुम देखता है तुम बोलता है, यह मरता है, तो तुम्हारे लिए वो मरता है पर उसको मालूम है, हम मर नही सकता हम आत्मा है। और तुम्हारे में जो आदमी आत्मा का ध्यान रखता है, समझता है कि मै आत्मा हूँ वो मर नही सकता है, डाक्टर भी बोल जाता है तो यह अभी मरेगा, तभी वो बोलता है, मै मरने वाला नही हूँ, यह डाक्टर मरेगा हम नही मरता।

हम तुम को नही बात सुनाया था, एक बार हम यहाँ से जाते थे, मेथेरेन में तो हमारा बड़ा भाई बीमार था। हम यहाँ एक डाक्टर रहता था, एक हमारी जगह में किराए पर, डाक्टर बलानी। बड़ा अच्छा आदमी था, उसको अभी बुलाया। देखकर मेरे को बोलाता है, तुम कि भाई की हालत देखता है, तुम जाता है मेथेरान में। हम बोलता है, हम ख्याल करके बैठा है, सब को खबर दिया है तुम आना स्टेशन पर। आयेगा तब हम को जाना है, अब क्या करें। उसने बोला, हालत भाई का देखता है, ये एक दिन भी नही निकालेगा। हम बोला, हम को तो जाने का है, फिर देखा जायेगा। चले गए। दूसरे दिन हमको मेथेरान में चिट्ठी, तार गया यहाँ बम्बई से कि डाक्टर मर गया और हमारा भाई तो चलता फिरता है। देखा कि कोई डाक्टर भी जान नही सकता है, कोई आदमी कितना टाइम रहेगा। कितना नही रहेगा, कभी मरेगा, कभी नही मरेगा, यह किसी को भी मालूम नही पड़ता। यह मालूम पड़ने की चीज़ ही नही है और इसका ख्याल भी तुम कभी नही रखो तो हम कभी मरेगा हम कभी पैदा करेगा। तुम को जो मरने का है, तो डाक्टर के पास चले जाओ और अगर नही मरने का, तो सीधा यहाँ आ जाओ, कही भी रास्ते में ठहर नही जाना नही तो मर जाएगा रास्ते में। हमारे पास आ जायेगा, तो मर नही सकता।

तुम को जो मरने का है, तो डाक्टर के पास चले जाओ और अगर नही मरने का, तो सीधा यहाँ आ जाओ, कही भी रास्ते में ठहर नही जाना नही तो मर जाएगा रास्ते में।

अष्ट ग्रह यहाँ हुआ था जब आठ दस महीने आगे अष्ट ग्रह हुआ था। तब हमारे पास कितनी माई पड़ोसी आयी कि, दादा तुम्हारे पास तो मौत आ नही सकती हम आके तुम्हारे पास रहेगा। हमने बोला अभी आजा। बिस्तरा विस्तरा नही लाना है, यहाँ बहुती है हमारे पास तुम अभी यहाँ आ के रहो हमारे पास। सब आके रहा आख़री रात सुजाग रहा हरी ओम् हरी ओम् करता रहा, भजन हो गया तो कोई एक भी मरा नही, तो बाहर के लोग अख़बार आ गई, कि कितने आदमी Pune में गया था वो मर गया और कितने आदमी बचने के लिए

फलाने मुल्क में गया तो वहाँ मर गया। जो बचने के लिए कोशिश करता था, वो मर गया। और जो हमारे पास जो आये जो, हम यहाँ भगवान के पास बेठे है, यहाँ मौत नहीं आयेगा उसको काल नही आया। ऐसा ही है तुम्हारा विश्वास है, जिसके ऊपर तुम चल सकता है। तुम कभी विश्वास पक्का रखेगा, तो पक्का ही तुम पायेगा, सच पायेगा।

## Truth Reality, God is Truth Reality: God is Life, Eternal Life.

तुम को समझना चाहिए कि आत्माकार माना क्या है? जब भी हम तुम को बोलता है तुम आत्मा है, तो उसका मतलब है you have Eternal Life, Immortal you are. You will never die. यह guaranteed Gyan है।

> You have Eternal Life, Immortal you are. You will never die. यह guaranteed Gyan है।

कृष्ण भगवान बोलता है, यह जो ज्ञान मेरा लेता है, उसको प्रत्यक्ष फल उसे मिलता है, उसी वक़्त। जिस वक़्त तुम सुना उसी वक़्त तुम अमर हो गया। हमारे पास मेथेरान में जो आते थे, सब को बोलते थे, जो तुम आये है, तो मनुष्य बनके आये है, लेकिन यहाँ से जब जाते है, तो भगवान बन के जाओ। अब मनुष्य की बात मत करना। मैं मनुष्य हूँ, मैं फलाना मल हूँ लेकिन, “मैं भगवान हूँ”, यह याद करना। सब यहाँ से आत्मा बन के आते थे। घर में जाते थे तो सब को बोलते थे मैं आत्मा, सब को सुनाया, सब को समझाया, सब घर में भी जितने बच्चे बालक छोटे बड़े रहते थे, तो वो भी समझ गया, मैं आत्मा हूँ। ऐसा तुम जब समझ लेता है, मैं आत्मा हूँ, तुम्हारी वाणी में इतनी ताकत है, तुम किस को भी बोलेगा, तो जैसा electricity तुम को लगता है, तो तुम को कोई आदमी, तो कोई तुमको हाथ लगाता है, उसको electricity लग जाता है। ऐसा current भगवान की तुम्हारे पास आ जाती है, कि तुम को इतना शक्ति मिल जाती है, कि तुम को मालूम पड़ जाता है। अपने आप से तुम को मालूम पड़ जाता है “मै आत्मा हूँ“। अब तो हूँ मैं अमर, मैं अमर बन गया, मैं ही पुण्य और पापन के रुपी मंदिर में बसता है। वो निष्काम है, आत्म दृष्टि वाला।

जैसे अचानक आग में कोई जुलस जाता है, या कोई अचानक जल जाता है, या दरिया में कोई डूब जाता है अचानक। आग या जल हंता नही देखी जाती है। जैसे खून की कोशिश करने वाला बिना खून के भी सज़ा भोगता है। जैसे तुम्हारी intention यह था उसको खून करने का, यह कर्म का मर्म intention of your Karama. तुम्हारे कर्म से सज़ा नही मिलती है, लेकिन तुम्हारा कर्म करने में, क्या मुराद है तुम्हारी। ऐसा ही फाँसी देने वाला जज भी वही है, उसका कोई क़सूर नही है लेकिन तुमको फाँसी देता, तुम मरता भी

है, तो भी उसको क़सूर नही लगेगा ,जज का। क्योंकि जज इंसाफ़ किया है, जज का काम ही इंसाफ़ करने का, किसको सज़ा देता है मरने का किसको फाँसी की सज़ा देता है। किसको माफ़ कर सकता है। अभी यह ब्रह्मज्ञान तीन किस्म का है। सतोगुणी ज्ञान यह है कि जिस ज्ञान से सब आदमी में सब चीज़ में एक ही आत्म सत्ता अविनाशी, undivided देखने में आती है। उसमें division नही है, जुदा जुदा भाव नही है। एक ही भाव से देखता है सब में आत्मा। जैसा करोड़न दीयन में एक ज्योत जारी, एक ही ज्योत है, करोड़ दीया है, लेकिन जोत एक ही है।